



। । श्री गणेशाय नमः । ।

## HOROSCOPE

Sunil Kumar Suman

07/06/1999 13:07

Khanpur, Jhalawar, Rajasthan, India

Generated By



JYOTISHAM  
ASTRO API

## बुनियादी ज्योतिषीय विवरण

### बुनियादी विवरण

जन्मतिथि	07/06/1999
जन्म का समय	13:07
जन्म स्थान	Khanpur, Jhalawar, Rajasthan, India
अक्षांश	24.729839500000004
देशान्तर	76.3948484
समय क्षेत्र	+5.5
अयनांश	23.84638888888889
सूर्योदय	5:36:06 पूर्वाह्नि
सूर्यास्त	7:13:10 अपराह्नि

### घटक चक्र

दिन	गुरुवार
तिथि	3(तृतीया), 8(अष्टमी), 13(त्रयोदशी)
राशि	धनु
तत्व	मानस
भगवान्	बृहस्पति
नक्षत्र	आद्रा
समान लिंग लग्न	मिथुन
विपरीत लिंग लग्न	धनु

### पंचांग

तिथि	अष्टमी
योग	प्रीति
नक्षत्र	पूर्वभाद्रपद
कर्ण	कौलव

### ज्योतिषीय विवरण

तिथि	अष्टमी
वर्ण	ब्राह्मण
योनि	सिंह
वास्या	मनुष्य
नाड़ी	आदि
राशि	कुम्भ
राशि स्वामी	शनि
कर्ण	कौलव
तत्व	आकाश
नक्षत्र	पूर्वभाद्रपद
नक्षत्र स्वामी	बृहस्पति
लग्न	कन्या
पर्या	रौप्य (रजत)
नाम	से सो द दी

## ग्रह स्थिति

ग्रह	स्थानीय डिग्री	वैश्विक डिग्री	राशि	राशि स्वामी	घर	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	अवस्था
लग्न	2.420641863423498	152.4206418634235	कन्या	बुध	1	उत्तराफाल्युनी	सूरज	-
सूरज	22.289653211374088	52.28965321137409	वृषभ	शुक्र	9	रोहिणी	चंद्रमा	वृद्धा
चंद्रमा	23.97195401621866	323.97195401621866	कुम्भ	शनि	6	पूर्वाभाद्रपद	बृहस्पति	वृद्धा
मंगल	0.6584499549713598	180.65844995497136	तुला	शुक्र	2	चित्रा	मंगल	नवजात (बाला)
बुध	6.751911578941645	66.75191157894164	मिथुन	बुध	10	आर्द्रा	राहु	युवा (कुमारा)
बृहस्पति	2.4059491293989694	2.4059491293989694	मेष	मंगल	8	अश्विन	केतु	नवजात (बाला)
शुक्र	7.565494183563445	97.56549418356344	कर्क	चंद्रमा	11	पुष्य	शनि	युवा (कुमारा)
शनि	17.932766942589886	17.932766942589886	मेष	मंगल	8	भरणी	शुक्र	वयस्क (युवा)
राहु	22.24001114706101	112.24001114706101	कर्क	चंद्रमा	11	आश्लेषा	बुध	वृद्धा
केतु	22.24001114706101	292.240011147061	मकर	शनि	5	श्रवण	चंद्रमा	वृद्धा



सूरज  
वृषभ  
रोहिणी(4)

मज्जबूत



चंद्रमा  
कुम्भ  
पूर्वाभाद्रपद(2)

तटस्थ



मंगल  
तुला  
चित्रा(3)

क्रिटिकल डिग्री



बुध  
मिथुन  
आर्द्रा(1)

मज्जबूत



बृहस्पति  
मेष  
अश्विन(1)

मज्जबूत



शुक्र  
कर्क  
पुष्य(2)

तटस्थ



शनि  
मेष  
भरणी(2)

मज्जबूत



राहु  
कर्क  
आश्लेषा(2)

मज्जबूत

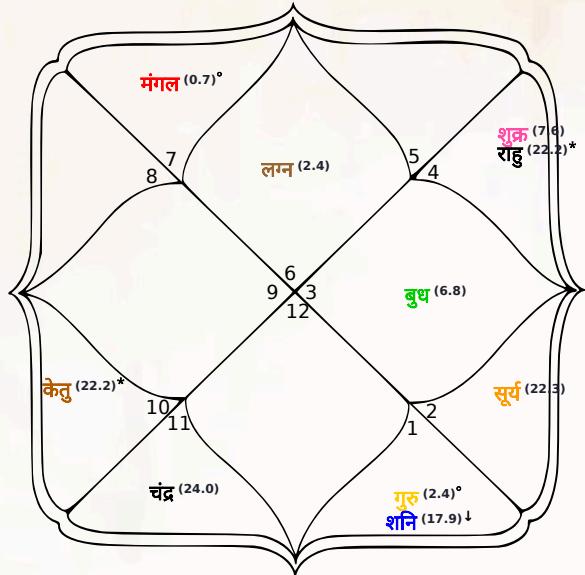


केतु  
मकर  
श्रवण(4)

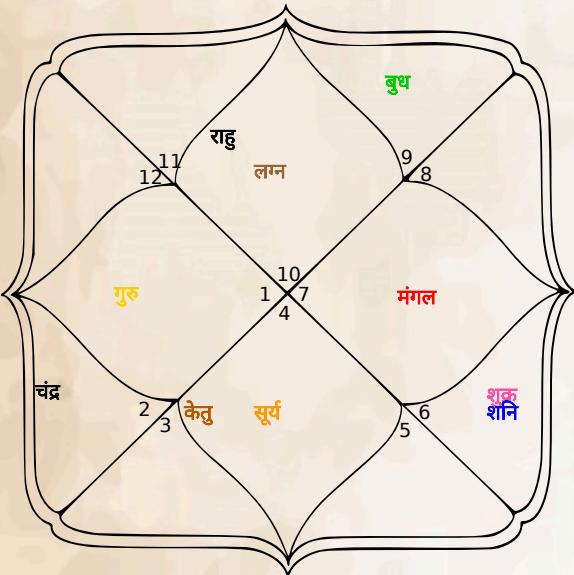
मज्जबूत

## राशिफल चार्ट

लग्न, जिसे लग्न के नाम से भी जाना जाता है, वह राशि है जो किसी व्यक्ति के जन्म के ठीक समय पर पूर्वी क्षितिज पर उग रही थी। यह जन्म कुंडली में सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है, क्योंकि यह पूरी कुंडली की नींव को आकार देता है। लग्न को चार्ट का शुरुआती बिंदु माना जाता है और इसे पहले घर के रूप में गिना जाता है। लग्न से, अन्य घरों को क्रम में व्यवस्थित किया जाता है, शेष राशियों के माध्यम से आगे बढ़ते हुए। इसका मतलब यह है कि लग्न न केवल उस राशि की पहचान करता है जो उग रही थी, बल्कि चार्ट में अन्य सभी घरों के लेआउट को भी निर्धारित करती है। कुंडली में प्रत्येक घर जीवन के विशिष्ट पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे परिवार, करियर, रिश्ते और स्वास्थ्य। इसलिए, लग्न किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, जीवन यात्रा और भाग्य को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



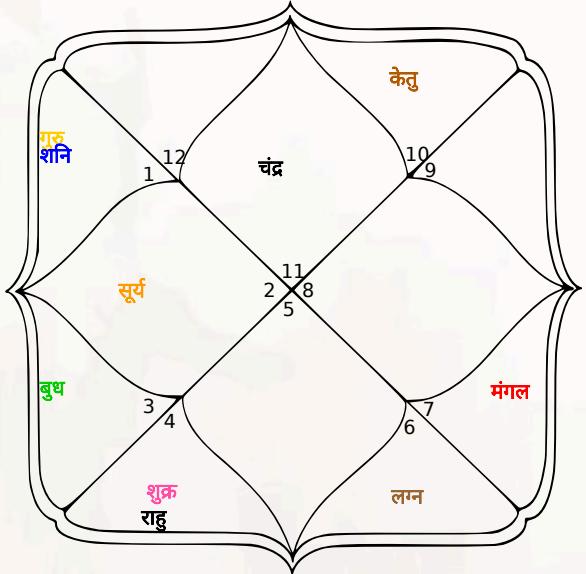
लग्न कुंडली (जन्म कुंडली)



नवमांश चार्ट(D9)

नवमांश चार्ट वैदिक ज्योतिष में सबसे महत्वपूर्ण विभागीय चार्ट में से एक है। 'नवमांश' शब्द का अर्थ है 'नौ भाग', जो प्रत्येक राशि (राशि) के नौ बराबर भागों में विभाजन को दर्शाता है। इनमें से प्रत्येक भाग, जिसे अंस कहा जाता है, एक राशि के भीतर 3 डिग्री और 20 मिनट तक फैला होता है। यह चार्ट जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि रिश्तों, आध्यात्मिकता और जन्म कुंडली में ग्रहों की ताकत के बारे में गहरी जानकारी प्रदान करता है। मुख्य जन्म कुंडली के साथ-साथ नवमांश चार्ट का विश्लेषण करके, ज्योतिषी किसी व्यक्ति के चरित्र, भाग्य और संभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अधिक विस्तृत समझ प्राप्त कर सकते हैं।

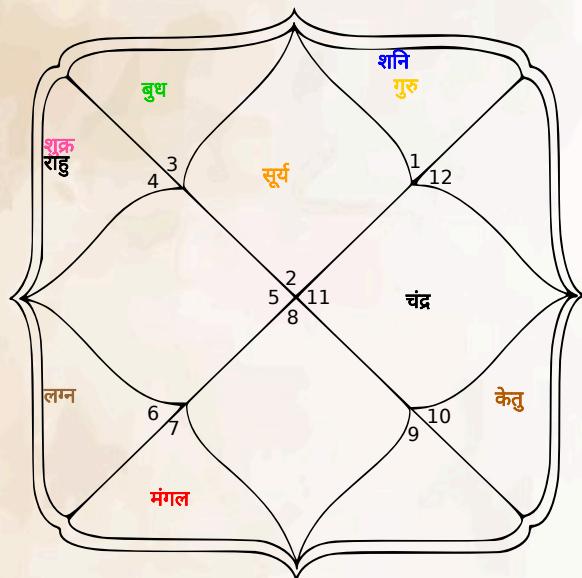
ज्योतिष में चंद्रमा चार्ट एक मूल्यवान उपकरण है जिसका उपयोग सटीक भविष्यवाणियां करने के लिए किया जाता है। इसे चंद्र राशि - वह राशि जहाँ जन्म के समय चंद्रमा स्थित था - को शुरुआती बिंदु या प्रथम भाव के रूप में रखकर बनाया जाता है। ज्योतिषी अक्सर गहरी जानकारी प्राप्त करने के लिए चंद्र चार्ट की तुलना लग्न (आरोही) चार्ट से करते हैं। जब विशिष्ट ग्रह संरेखण, जिन्हें योग या संयोजन के रूप में जाना जाता है, चंद्र चार्ट और लग्न चार्ट दोनों में दिखाई देते हैं, तो उनका प्रभाव आमतौर पर किसी व्यक्ति के जीवन में बहुत अधिक मजबूत और अधिक ध्यान देने योग्य होता है। यह संरेखण घटनाओं और प्रभावों की स्पष्ट समझ प्रदान करने में मदद करता है, जिससे भविष्यवाणियाँ अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बनती हैं।



चंद्र कुंडली

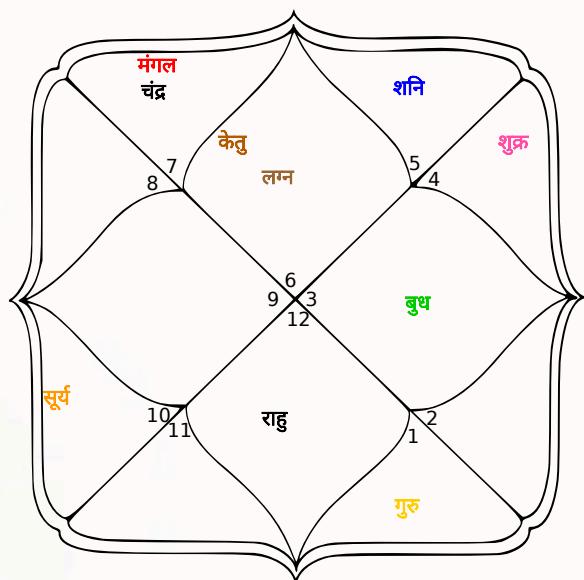
## संभागीय चार्ट

**सूरज**



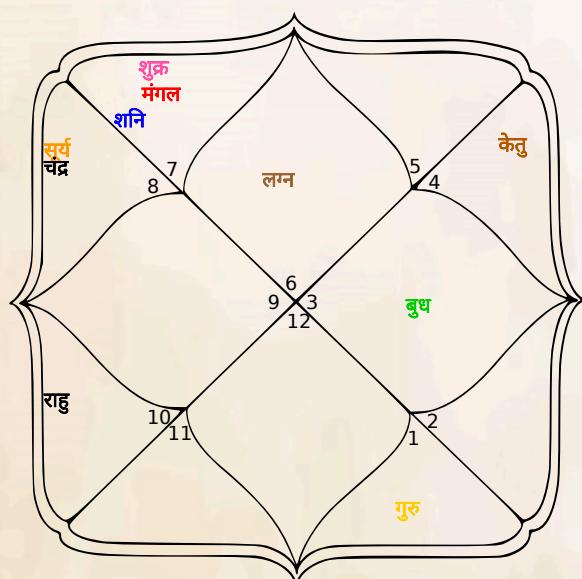
स्वास्थ्य, संविधान, शरीर

**द्रेष्काण (D3)**



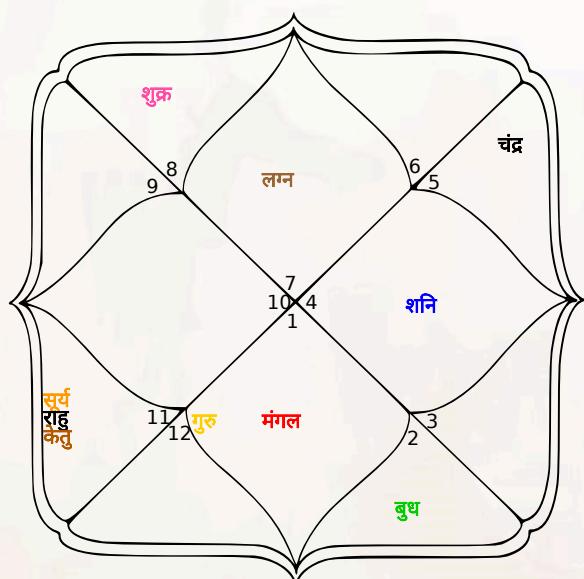
भाइयों बहनों

**चतुर्थांश (D4)**



भाग्य, जातक का सौभाग्य

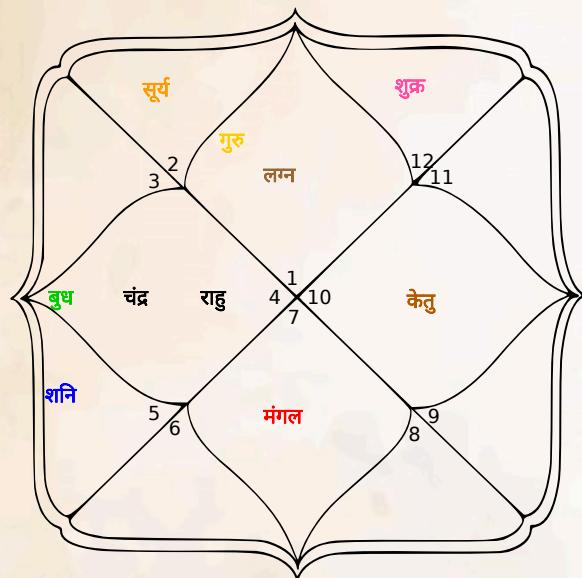
**षष्ठमांश (D6)**



स्वास्थ्य

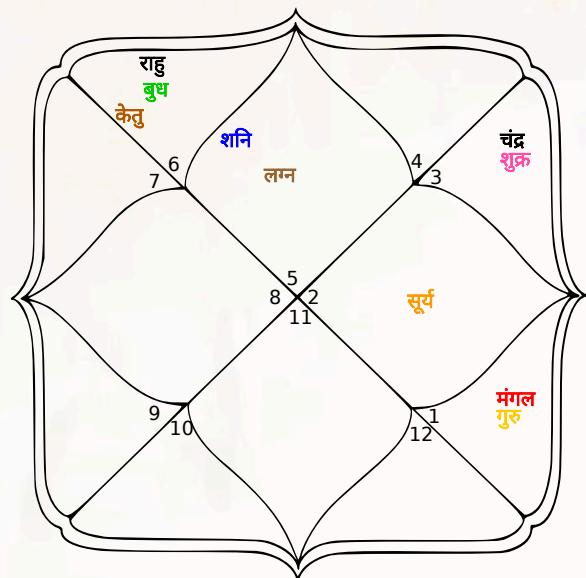
## संभागीय चार्ट

**सप्तमांश (D7)**



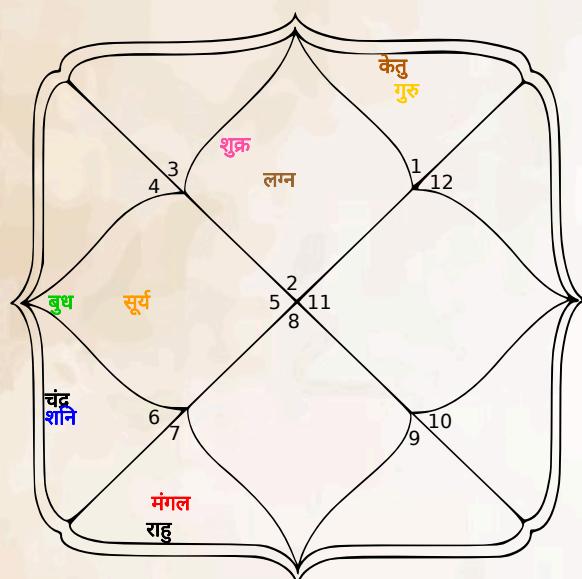
गर्भाधान, बच्चे का जन्म

**अष्टमांश (D8)**



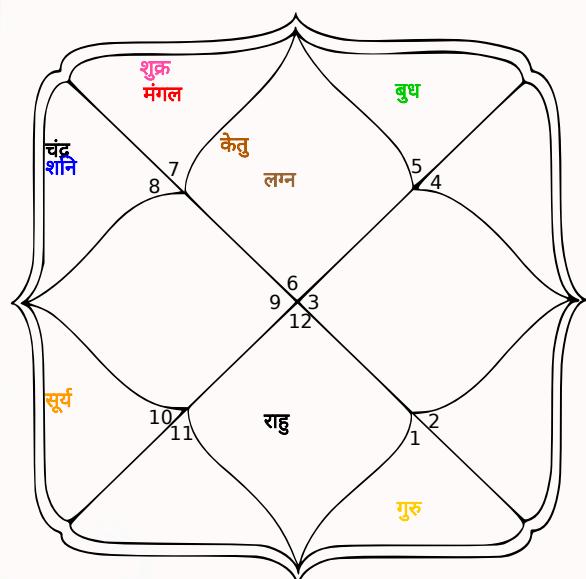
दीर्घायु दर्शाता है

**दशमांश (D10)**



आजीविका, पेशा

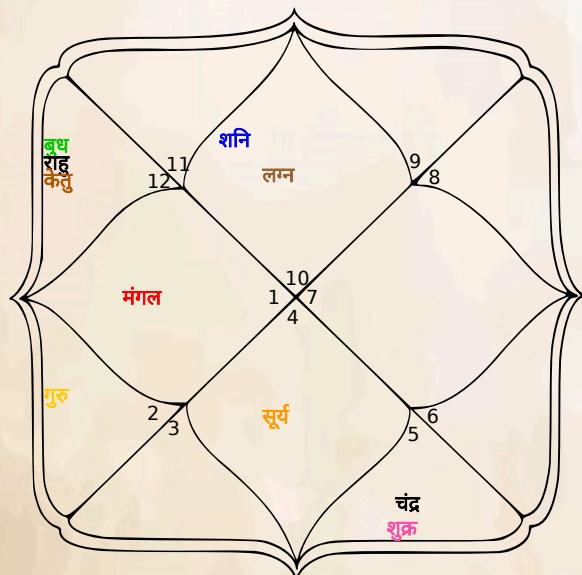
**द्वादशांश (D12)**



माता-पिता, पितृ सुख

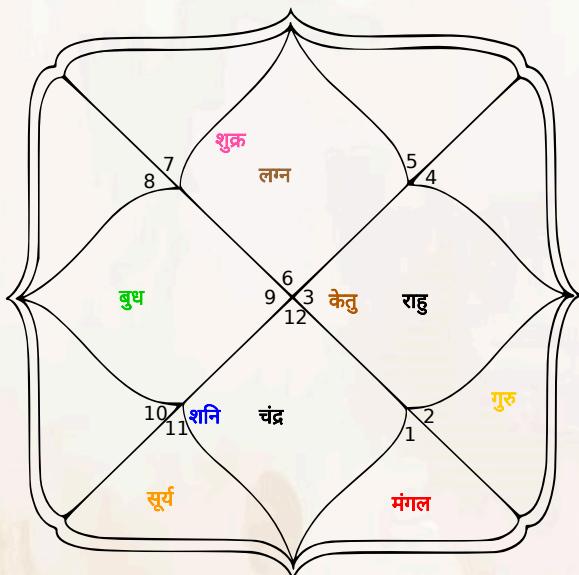
संभागीय चार्ट

षोडशांश (D16)



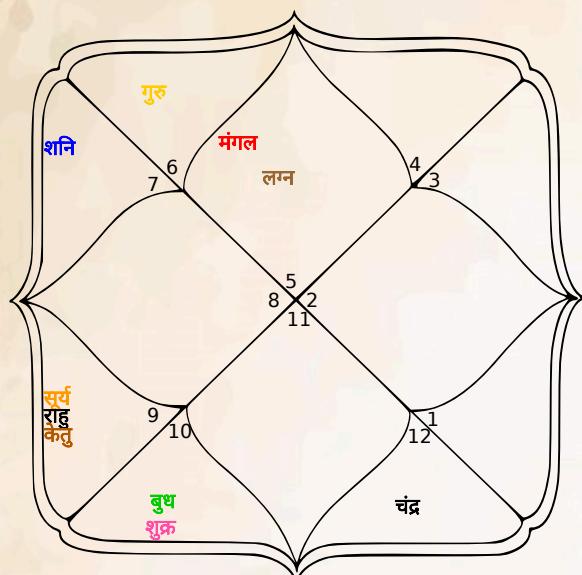
सुख, दुख, परिवहन

विषांशा (D20)



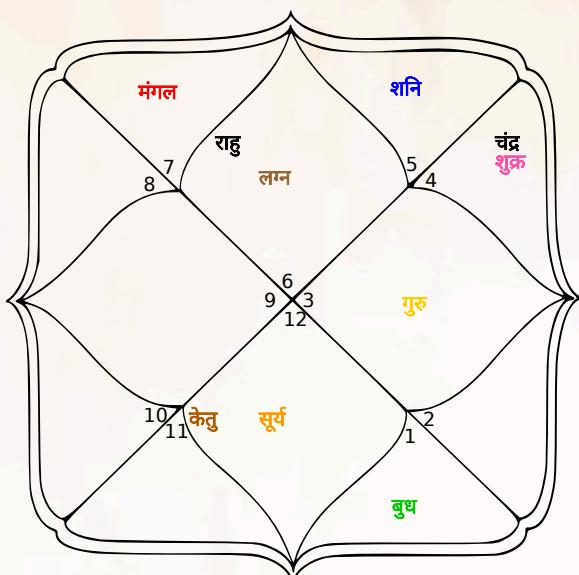
## आध्यात्मिक प्रगति, उपासना

चतुर्विंशा (D24)



शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

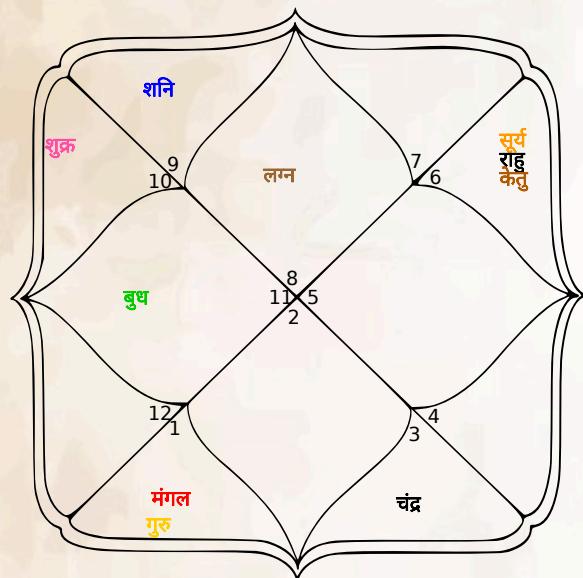
सप्तविषांश (D27)



शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

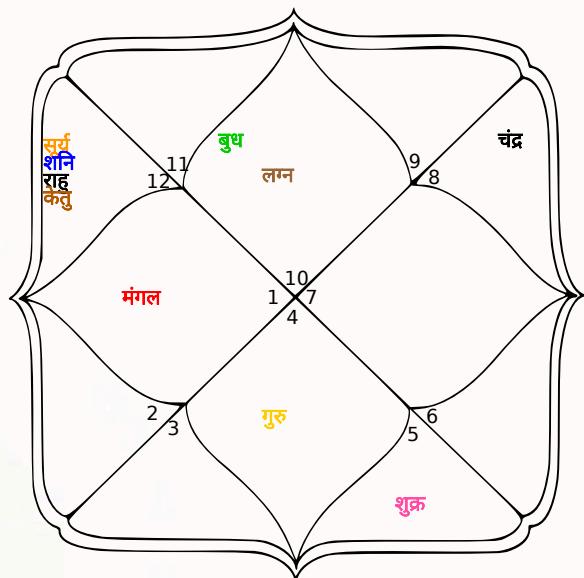
## संभागीय चार्ट

**त्रिशांशा (D30)**



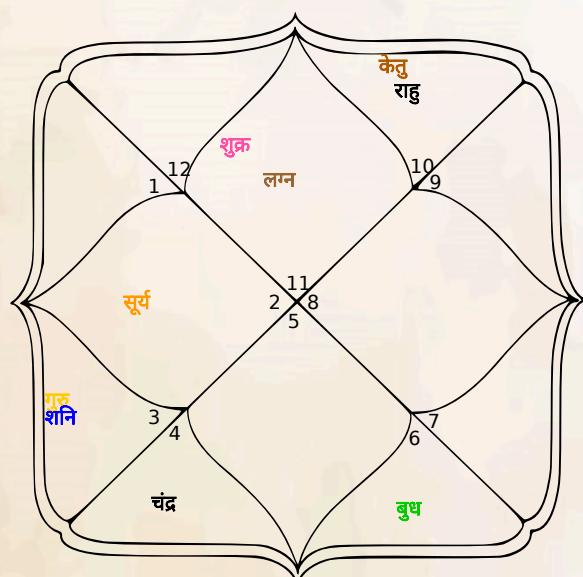
बुराई, जीवन की प्रतिकूलताएँ

**खावेदांशा (D40)**



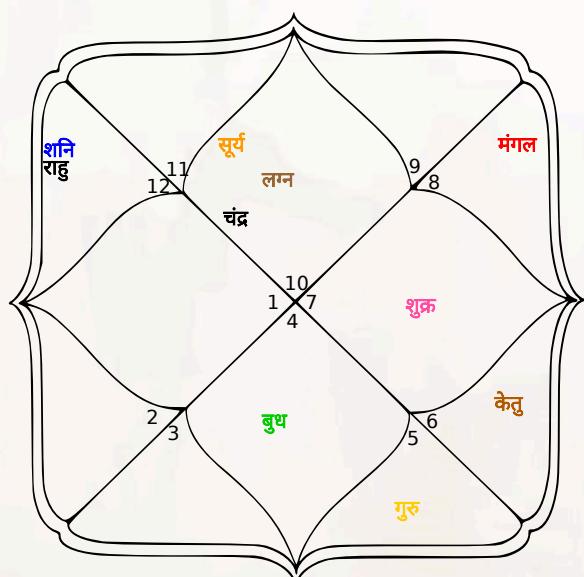
शुभ एवं अशुभ प्रभाव

**अक्षवेदांशा (D45)**



जातक का चरित्र और आचरण

**षष्ठ्यांश (D60)**

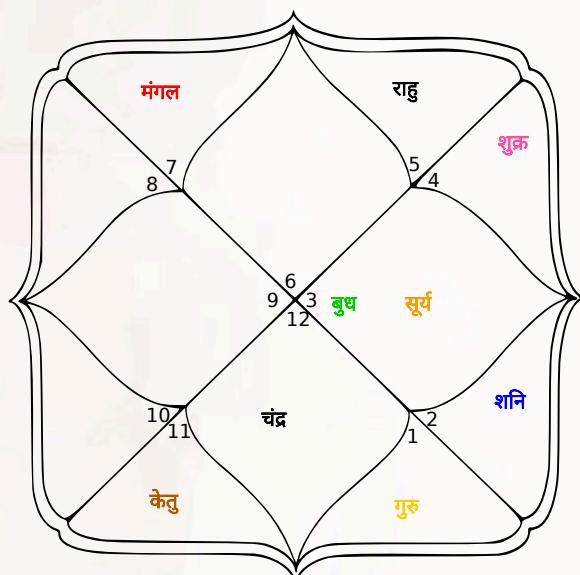


सामान्य खुशी दर्शता है

## केपी ग्रहों का विवरण

ग्रह	डिग्री	राशि क्रमांक	राशि चक्र	राशि स्वामी	घर
लग्न	152.5206418634235	6	कन्या	बुध	1
सूरज	52.38965321137409	2	वृषभ	शुक्र	9
चंद्रमा	324.0719540162187	11	कुम्भ	शनि	6
मंगल	180.75844995497135	7	तुला	शुक्र	2
बुध	66.85191157894164	3	मिथुन	बुध	10
बृहस्पति	2.5059491293989695	1	मेष	मंगल	8
शुक्र	97.66549418356344	4	कर्क	चंद्रमा	11
शनि	18.032766942589888	1	मेष	मंगल	8
राहु	112.340011147061	4	कर्क	चंद्रमा	11
केतु	292.34001114706103	10	मकर	शनि	5

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	नक्षत्र पद	उप-स्वामी	उप-उप-स्वामी
लग्न	उत्तराफाल्युनी	सूरज	2	बृहस्पति	सूरज
सूरज	रोहिणी	चंद्रमा	4	शुक्र	बुध
चंद्रमा	पूर्वाभाद्रपद	बृहस्पति	2	बुध	बुध
मंगल	चित्रा	मंगल	3	बुध	शुक्र
बुध	आद्रा	राहु	1	राहु	राहु
बृहस्पति	अश्विन	केतु	1	शुक्र	शनि
शुक्र	पुष्य	शनि	2	केतु	चंद्रमा
शनि	भरणी	शुक्र	2	मंगल	शुक्र
राहु	आश्लेषा	बुध	2	चंद्रमा	चंद्रमा
केतु	श्रवण	चंद्रमा	4	शुक्र	बुध



## मैत्री तालिका

### स्थायी मित्रता

ग्रह	सूरज	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सूरज	--	दोस्त	दोस्त	तटस्थ	दोस्त	दुश्मन	दुश्मन
चंद्रमा	दोस्त	--	तटस्थ	दोस्त	तटस्थ	तटस्थ	तटस्थ
मंगल	दोस्त	दोस्त	--	दुश्मन	दोस्त	तटस्थ	तटस्थ
बुध	दोस्त	दुश्मन	तटस्थ	--	दुश्मन	दोस्त	तटस्थ
बृहस्पति	दोस्त	दोस्त	दोस्त	दुश्मन	--	दुश्मन	तटस्थ
शुक्र	दुश्मन	तटस्थ	तटस्थ	दोस्त	तटस्थ	--	दोस्त
शनि	दुश्मन	दुश्मन	दुश्मन	दोस्त	तटस्थ	दोस्त	--

### अस्थायी मित्रता

ग्रह	सूरज	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सूरज	--	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	दोस्त	दोस्त	दोस्त
चंद्रमा	दोस्त	--	दुश्मन	दुश्मन	दोस्त	दुश्मन	दोस्त
मंगल	दुश्मन	दुश्मन	--	दुश्मन	दुश्मन	दोस्त	दुश्मन
बुध	दोस्त	दुश्मन	दुश्मन	--	दोस्त	दोस्त	दोस्त
बृहस्पति	दोस्त	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	--	दोस्त	दुश्मन
शुक्र	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	दोस्त	दोस्त	--	दोस्त
शनि	दोस्त	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	--

### पांच गुना दोस्ती

ग्रह	सूरज	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सूरज	--	अंतरंग दोस्त	तटस्थ	दोस्त	अंतरंग दोस्त	तटस्थ	तटस्थ
चंद्रमा	अंतरंग दोस्त	--	दुश्मन	तटस्थ	दोस्त	दुश्मन	दोस्त
मंगल	तटस्थ	तटस्थ	--	जानी दु.	तटस्थ	दोस्त	दुश्मन
बुध	अंतरंग दोस्त	जानी दु.	दुश्मन	--	दोस्त	अंतरंग दोस्त	दोस्त
बृहस्पति	अंतरंग दोस्त	अंतरंग दोस्त	तटस्थ	तटस्थ	--	तटस्थ	दुश्मन
शुक्र	तटस्थ	जानी दु.	दोस्त	अंतरंग दोस्त	दोस्त	--	अंतरंग दोस्त
शनि	तटस्थ	तटस्थ	जानी दु.	अंतरंग दोस्त	दुश्मन	अंतरंग दोस्त	--

## दशा

### बृहस्पति

प्रारंभ: बुधवार अगस्त 31 1994  
समाप्त: मंगलवार अगस्त 31 2010

बृहस्पति	शुक्रवार, 18 अक्टूबर 1996, 05:00:00
शनि	शनिवार, 01 मई 1999, 12:00:00
बुध	सोमवार, 06 अगस्त 2001, 10:00:00
केतु	शनिवार, 13 जुलाई 2002, 08:00:00
शुक्र	रविवार, 13 मार्च 2005, 08:00:00
सूर्य	शुक्रवार, 30 दिसंबर 2005, 13:00:00
चंद्रमा	मंगलवार, 01 मई 2007, 13:00:00
मंगल	रविवार, 06 अप्रैल 2008, 11:00:00
राहु	मंगलवार, 31 अगस्त 2010, 00:00:00

### शनि

प्रारंभ: बुधवार सितंबर 01 2010  
समाप्त: शनिवार सितंबर 01 2029

शनि	मंगलवार, 03 सितंबर 2013, 20:00:00
बुध	शनिवार, 14 मई 2016, 00:00:00
केतु	गुरुवार, 22 जून 2017, 20:00:00
शुक्र	शनिवार, 22 अगस्त 2020, 12:00:00
सूर्य	बुधवार, 04 अगस्त 2021, 12:00:00
चंद्रमा	रविवार, 05 मार्च 2023, 20:00:00
मंगल	शनिवार, 13 अप्रैल 2024, 16:00:00
राहु	गुरुवार, 18 फ़रवरी 2027, 16:00:00
बृहस्पति	शनिवार, 01 सितंबर 2029, 00:00:00

### बुध

प्रारंभ: रविवार सितंबर 02 2029  
समाप्त: रविवार सितंबर 02 2046

बुध	गुरुवार, 29 जनवरी 2032, 15:00:00
केतु	मंगलवार, 25 जनवरी 2033, 20:00:00
शुक्र	सोमवार, 26 नवंबर 2035, 16:00:00
सूर्य	गुरुवार, 02 अक्टूबर 2036, 03:00:00
चंद्रमा	बुधवार, 03 मार्च 2038, 13:00:00
मंगल	सोमवार, 28 फ़रवरी 2039, 18:00:00
राहु	मंगलवार, 17 सितंबर 2041, 02:00:00
बृहस्पति	बुधवार, 23 दिसंबर 2043, 23:00:00
शनि	रविवार, 02 सितंबर 2046, 00:00:00

### केतु

प्रारंभ: सोमवार सितंबर 03 2046  
समाप्त: बुधवार सितंबर 03 2053

केतु	बुधवार, 30 जनवरी 2047, 04:00:00
शुक्र	मंगलवार, 31 मार्च 2048, 08:00:00
सूर्य	गुरुवार, 06 अगस्त 2048, 04:00:00
चंद्रमा	रविवार, 07 मार्च 2049, 06:00:00
मंगल	मंगलवार, 03 अगस्त 2049, 10:00:00
राहु	रविवार, 21 अगस्त 2050, 23:00:00
बृहस्पति	शुक्रवार, 28 जुलाई 2051, 21:00:00
शनि	गुरुवार, 05 सितंबर 2052, 18:00:00
बुध	बुधवार, 03 सितंबर 2053, 00:00:00

## दशा

### शुक्र

प्रारंभ: गुरुवार सितंबर 04 2053  
समाप्त: सोमवार सितंबर 04 2073

शुक्र	बुधवार, 03 जनवरी 2057, 12:00:00
सूर्य	गुरुवार, 03 जनवरी 2058, 18:00:00
चंद्रमा	गुरुवार, 04 सितंबर 2059, 12:00:00
मंगल	बुधवार, 03 नवंबर 2060, 15:00:00
राहु	रविवार, 04 नवंबर 2063, 09:00:00
बृहस्पति	सोमवार, 05 जुलाई 2066, 09:00:00
शनि	बुधवार, 04 सितंबर 2069, 00:00:00
बुध	सोमवार, 04 जुलाई 2072, 21:00:00
केतु	सोमवार, 04 सितंबर 2073, 00:00:00

### सूर्य

प्रारंभ: मंगलवार सितंबर 05 2073  
समाप्त: मंगलवार सितंबर 05 2079

सूर्य	शनिवार, 23 दिसंबर 2073, 13:00:00
चंद्रमा	रविवार, 24 जून 2074, 03:00:00
मंगल	सोमवार, 29 अक्टूबर 2074, 22:00:00
राहु	सोमवार, 23 सितंबर 2075, 14:00:00
बृहस्पति	शनिवार, 11 जुलाई 2076, 17:00:00
शनि	बुधवार, 23 जून 2077, 15:00:00
बुध	शनिवार, 30 अप्रैल 2078, 00:00:00
केतु	रविवार, 04 सितंबर 2078, 19:00:00
शुक्र	मंगलवार, 05 सितंबर 2079, 00:00:00

### चंद्रमा

प्रारंभ: बुधवार सितंबर 06 2079  
समाप्त: सोमवार सितंबर 05 2089

चंद्रमा	शनिवार, 06 जुलाई 2080, 08:00:00
मंगल	मंगलवार, 04 फ़रवरी 2081, 09:00:00
राहु	गुरुवार, 06 अगस्त 2082, 04:00:00
बृहस्पति	सोमवार, 06 दिसंबर 2083, 02:00:00
शनि	शुक्रवार, 06 जुलाई 2085, 08:00:00
बुध	गुरुवार, 05 दिसंबर 2086, 17:00:00
केतु	रविवार, 06 जुलाई 2087, 18:00:00
शुक्र	रविवार, 06 मार्च 2089, 10:00:00
सूर्य	सोमवार, 05 सितंबर 2089, 00:00:00

### मंगल

प्रारंभ: मंगलवार सितंबर 06 2089  
समाप्त: गुरुवार सितंबर 06 2096

मंगल	गुरुवार, 02 फ़रवरी 2090, 04:00:00
राहु	मंगलवार, 20 फ़रवरी 2091, 17:00:00
बृहस्पति	रविवार, 27 जनवरी 2092, 15:00:00
शनि	शनिवार, 07 मार्च 2093, 12:00:00
बुध	गुरुवार, 04 मार्च 2094, 18:00:00
केतु	शनिवार, 31 जुलाई 2094, 22:00:00
शुक्र	शनिवार, 01 अक्टूबर 2095, 02:00:00
सूर्य	रविवार, 05 फ़रवरी 2096, 22:00:00
चंद्रमा	गुरुवार, 06 सितंबर 2096, 00:00:00

## दशा

## राहु

प्रारंभ: शुक्रवार सितंबर 07 2096

समाप्त: शनिवार सितंबर 08 2114

राहु	गुरुवार, 21 मई 2099, 02:00:00
बृहस्पति	शुक्रवार, 14 अक्टूबर 2101, 15:00:00
शनि	बुधवार, 20 अगस्त 2104, 12:00:00
बुध	बुधवार, 09 मार्च 2107, 20:00:00
केतु	मंगलवार, 27 मार्च 2108, 08:00:00
शुक्र	शनिवार, 28 मार्च 2111, 00:00:00
सूर्य	शुक्रवार, 19 फ़रवरी 2112, 17:00:00
चंद्रमा	रविवार, 20 अगस्त 2113, 13:00:00
मंगल	शनिवार, 08 सितंबर 2114, 00:00:00

## वर्तमान चल रही दशा

दशा नाम	ग्रहों	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि
महादशा	शनि	बुधवार, 01 सितंबर 2010	शनिवार, 01 सितंबर 2029
अन्तर्दशा	राहु	रविवार, 21 अप्रैल 2024	शुक्रवार, 26 फ़रवरी 2027
पर्यन्तर्दशा	बुध	सोमवार, 28 जुलाई 2025	सोमवार, 22 दिसंबर 2025
शुक्रमादशा	बुध	सोमवार, 28 जुलाई 2025	सोमवार, 18 अगस्त 2025
प्राणदशा	केतु	शुक्रवार, 01 अगस्त 2025	शनिवार, 02 अगस्त 2025

\* नोट: सभी तिथियां दशा की समाप्ति तिथि दर्शाती हैं।

## कालसर्प दोष



### कालसर्प दोष क्या है?

राहु और केतु वैदिक ज्योतिष में चंद्र नोड हैं, और भौतिक ग्रह न होने के बावजूद, उन्हें शक्तिशाली आकाशीय प्रभाव माना जाता है। वे कर्म पैटर्न से गहराई से जुड़े हुए हैं और अक्सर उनके तीव्र और परिवर्तनकारी प्रभावों के कारण उनसे डर लगता है। जब कुंडली में सभी सात ग्रह (सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि) राहु और केतु के बीच स्थित होते हैं, तो यह काल सर्प योग के रूप में जानी जाने वाली स्थिति बनाता है। माना जाता है कि यह संरेखण महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और बाधाएँ लाता है, हालाँकि कुछ मामलों में, यह उल्लेखनीय सकारात्मक परिणाम भी दे सकता है। राहु और केतु को अचानक, जीवन बदलने वाली घटनाओं को उत्पन्न करने की उनकी क्षमता के लिए जाना जाता है। ये बदलाव या तो अत्यधिक लाभकारी या विघटनकारी हो सकते हैं, जो अक्सर अप्रत्याशित रूप से या बहुत कम समय सीमा के भीतर होते हैं। उनका प्रभाव नाटकीय है, जो उन्हें ज्योतिषीय विश्लेषण में विचार करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु बनाता है।

कालसर्प दोष: false

प्रतिक्रिया: आपको काल-सर्प दोष नहीं है

## कालसर्प दोष के उपायः

1. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सिफारिश की जाती है। जिस व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प योग है, उसे नियमित रूप से भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए और बेहतर परिणाम के लिए, व्यक्ति भगवान शिव के मूल मंत्र का जाप भी कर सकता है। 'ओम नमः शिवाय' (ॐ नमः शिवाय) यह मंत्र काल सर्प दोष निवारण मंत्र के रूप में कार्य करता है। जो छात्र कालसर्प योग के दुष्प्रभाव से प्रभावित हैं उन्हें देवी सरस्वती के मूल मंत्र का जाप करना चाहिए मूल मंत्र छात्रों की एकाग्रता शक्ति को बढ़ाएगा और परिणामस्वरूप, वे बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम होंगे।
2. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सिफारिश की जाती है। किसी शुभ मुहूर्त में, कोयले के तीन टुकड़े बहते पानी में एक-एक करके प्रवाहित करें। यह सबसे अच्छे कालसर्प दोष उपचारों में से एक है। इससे कालसर्प दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। जातक की कुंडली से काल सर्प दोष दूर हो जाता है और वह अधिक शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन जीने में सक्षम हो जाता है। जो जातक काल सर्प योग से पीड़ित हैं उनके लिए नियमित रूप से 108 बार हनुमान चालीसा का जाप करना अत्यधिक लाभकारी होता है। जो लोग इस योग से प्रभावित हैं योग भगवान हनुमान के मंदिर भी जा सकते हैं और भगवान हनुमान की मूर्ति से सिंदूर का तिलक लगा सकते हैं।
3. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सलाह दी जाती है। रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का 108 बार जाप करने से जातक को इससे छुटकारा पाने में मदद मिलेगी। कालसर्प योग.'ॐ तयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर् मुक्षीय मामृतात्।'
4. घर में मोर का पंख रखने से कालसर्प योग का प्रभाव कम होता है। बच्चे अपनी एकाग्रता बढ़ाने के लिए इसे अपनी किताबों में भी रख सकते हैं।
5. हर शनिवार को शनिदेव की पूजा करने और शनिदेव के मूल मंत्र का जाप करने से काल सर्प योग का प्रभाव कम होता है। लोग शनिदेव को तिल और काले चने भी चढ़ा सकते हैं। भगवान शनि.'ओम शनि चराय नमः'
6. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सलाह दी जाती है। काल सर्प योग से छुटकारा पाने के लिए शुभ मुहूर्त में अपने घर में काल सर्प योग यंत्र स्थापित करें। आप इस मूल मंत्र का जाप भी कर सकते हैं। यंत्र को सक्रिय करना। "ब्रह्मा मूरि त्रिपुरांतकारी भानुः शशिः भूमिसुतो बुधश्च"
7. नाग पंचमी पर पूजा करें और पूजा के बाद, सुनिश्चित करें कि सपेरा सांप को खुले मैदान में छोड़ दे।

## मांगलिक दोष



### मांगलिक दोष क्या है?

वैदिक ज्योतिष में, मांगलिक दोष तब होता है जब मंगल, सूर्य, शनि, राहु या केतु किसी व्यक्ति की कुंडली के विशिष्ट घरों में स्थित होते हैं: लग्न (पहला घर), चौथा घर, सातवां घर, आठवां घर या बारहवां घर। माना जाता है कि यह स्थिति असंतुलन पैदा करती है, खासकर विवाह और रिश्तों में। लग्न में मंगल का प्रभाव तब अधिक तीव्र माना जाता है जब मंगल लग्न में चंद्रमा के साथ संयुक्त होता है। यदि लड़का और लड़की दोनों की कुंडली में मांगलिक दोष है, और ज्योतिषीय सिद्धांतों के अनुसार इसे रद्द कर दिया जाता है, तो उनकी शादी सामंजस्यपूर्ण और सफल होने की संभावना है। हालाँकि, यदि मांगलिक दोष का समाधान नहीं किया जाता है, तो यह विवाहित जीवन में अनावश्यक चुनौतियाँ, संघर्ष या देरी ला सकता है। एक खुशहाल और स्थिर विवाह सुनिश्चित करने के लिए, विवाह से पहले कुंडली का सावधानीपूर्वक मिलान करना महत्वपूर्ण है। जब मांगलिक दोष को ठीक से संबोधित किया जाता है और उसे समाप्त कर दिया जाता है, तो माना जाता है कि यह व्यक्ति के विवाहित जीवन में शांति, समृद्धि और स्थिरता लाता है।

### मांगलिक प्रतिशत: 0%

प्रतिक्रिया: आप 0% मांगलिक हैं।

## ग्रहों पर आधारित

- मंगल ग्रह से मांगलिक: false
- शनि द्वारा मांगलिक: false
- राहु और केतु द्वारा मांगलिक: false

## पहलुओं पर आधारित

- 2nd भाव में मंगल की दृष्टि 5th, 8th, और 9th भाव पर है।
- 8th भाव में शनि की दृष्टि 10th, 2nd, और 5th भाव पर है।
- 11th भाव में राहु की दृष्टि 3rd और 7th भाव पर है।
- 5th भाव में केतु की दृष्टि 9th और 1st भाव पर है।

## मांगलिक दोष के उपाय:

- यदि दोनों साथी मांगलिक हैं तो यह दोष समाप्त हो जाता है। इसके सभी बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं और दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय और खुशहाल हो सकता है।
- जब विवाह में कोई एक व्यक्ति मांगलिक होता है, तो कुभ विवाह नामक इस अनुष्ठान को करने से मंगल दोष के नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो सकते हैं। हिंदू वैदिक ज्योतिष के अनुसार मांगलिक व्यक्ति का विवाह केले के पेड़, पीपल के पेड़ या भगवान विष्णु की चांदी/सोने की मूर्ति से कराया जाता है।
- सभी उपायों में से मंगलवार का व्रत भी एक कारगर उपाय माना जाता है। इस दिन व्रत रखने वाले मांगलिक व्यक्तियों को केवल तुअर दाल खानी चाहिए
- मंगल ग्रह के मंत्र का जाप मंगलवार को करना चाहिए जिसे मंगल मंत्र के रूप में जाना जाता है। वे प्रतिदिन गायत्री मंत्र का 108 बार जाप भी कर सकते हैं या हनुमान चालीसा का प्रतिदिन जाप कर सकते हैं।
- नवग्रह मंदिरों में जाने से मंगल दोष के कारण होने वाले बुरे प्रभाव कम होते हैं। सबसे लोकप्रिय मंदिर तमिलनाडु में स्थित हैं। कुछ मंदिर असम के गुवाहाटी में भी स्थित हैं। मंदिर में धी का दीपक भी जलाएं।
- दाहिने हाथ की अनामिका में चमकीले लाल मूँगे के साथ सुनहरी अंगूठी पहनें। हालांकि, इसे पहनने से पहले किसी विश्वसनीय ज्योतिषी से कुंडली का गहन विश्लेषण करवा लें।

## पितृ दोष



### पितृ दोष क्या है?

वैदिक ज्योतिष में, पितृ दोष को पूर्वजों के अधूरे कर्तव्यों या अनसुलझे मुद्दों के परिणामस्वरूप होने वाला कर्म ऋण माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह तब होता है जब जन्म कुंडली में विशेष ग्रह संयोजन दिखाई देते हैं, खासकर जब राहु या केतु कुछ घरों में स्थित होते हैं या सूर्य जैसे प्रमुख ग्रहों के साथ संयुक्त होते हैं। यह दोष अक्सर पिछली पीढ़ियों द्वारा अधूरे छोड़े गए पिछले पारिवारिक दायित्वों या कर्मों को संबोधित करने की आवश्यकता को दर्शाता है। पितृ दोष जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वास्थ्य, करियर, वित्त या रिश्तों में कठिनाइयों का कारण बनता है। यह परिवार के भीतर बार-बार आने वाली चुनौतियों या बाधाओं के रूप में भी प्रकट हो सकता है। हालाँकि, यह दोष एक अभिशाप नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक विकास और पैतृक बोझ के समाधान के लिए एक आह्वान है। विशेष उपायों और अनुष्ठानों के माध्यम से, जैसे कि पितृ तर्पण करना या ज़रूरतमंदों को दान करना, पितृ दोष के प्रभावों को कम या समाप्त किया जा सकता है। इस दोष को संबोधित करने से पूर्वजों को शांति मिल सकती है, लंबित मुद्दों को हल किया जा सकता है और परिवार में सद्द्वाव और समृद्धि को आमंत्रित किया जा सकता है।

### क्या दोष मौजूद है: true

प्रतिक्रिया: सूर्य/चंद्रमा के साथ राहु/शनि की दृष्टि या युति के कारण आपकी कुंडली में पितृ दोष मौजूद है।

## प्रभाव

- बच्चों को मानसिक और शारीरिक विकलांगता का सामना करना पड़ सकता है।
- प्रतिकूल वातावरण और जीवन साथी के साथ बहस।
- विवाह में देरी।
- लगातार बीमारी के कारण आर्थिक और शारीरिक समस्याएँ।
- प्रयासों में सफलता की कमी।
- लगातार आर्थिक समस्याएँ।
- साँप या पूर्वजों द्वारा भोजन या कपड़े माँगने से संबंधित सपने।

## पितृ दोष के उपाय:

- बरगद के पेड़ पर नियमित रूप से जल चढ़ाएं।
- दोष के प्रभाव को कम करने के लिए व्रत रखें।
- पूजा या मंत्र जाप का आयोजन करें।
- अमावस्या पर ब्राह्मणों को भोजन कराएं।
- भोजन, कंबल और कपड़े दान करें।
- गाय, कुत्ते, कौवे और चींटियों को भोजन कराएं।
- त्रपंडी श्राद्ध पूरा करें।
- गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करें।
- नवरात्रि पर विशेष रूप से देवी कालिका स्तोत्र का जाप करें।
- धार्मिक स्थानों पर अनुष्ठान करें।
- उगते सूर्य को तिल के साथ जल चढ़ाएं और गायत्री मंत्र का जाप करें।



### साढ़ेसाती दोष क्या है?

साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि को संदर्भित करती है, जिसमें शनि तीन राशियों से गुजरता है, चंद्र राशि, चंद्रमा से एक पहले की राशि और एक उसके बाद की राशि। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि (शनि) जन्म चंद्र राशि से 12वीं राशि में प्रवेश करता है और तब समाप्त होती है जब शनि जन्म चंद्र राशि से 2वीं राशि छोड़ता है। चूँकि शनि एक राशि में गोचर करने में लगभग ढाई साल का समय लेता है, जिसे शनि की ढैय्या कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों में गोचर करने में इसे लगभग साढ़े सात साल लगते हैं और इसलिए इसे साढ़े साती के रूप में जाना जाता है। आम तौर पर साढ़े साती जीवनकाल में कुंडली में तीन बार आती है - पहली बचपन में, दूसरी युवावस्था में और तीसरी बुढ़ापे में। पहली साढ़े साती का शिक्षा और माता-पिता पर प्रभाव पड़ता है। दूसरी साढ़े साती का पेशे, वित्त और परिवार पर प्रभाव पड़ता है।

**प्रतिक्रिया:** यह आपका दूसरा साढ़े साती अवधि है। इस अवधि में आपको अपने पेशेवर जीवन में चुनौतियों और वित्तीय अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, कड़ी मेहनत और धैर्य के साथ, आप इन बाधाओं को पार कर सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

- क्या साढ़ेसाती चल रही है: true
- शनि काल प्रकार: दूसरा
- विवरण: साढ़े साती वह साढ़े सात साल की अवधि है जिसमें शनि तीन राशियों में से गुजरता है - चंद्र राशि, उसके पहले की राशि और उसके बाद की राशि। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि (शनि) जन्म की चंद्र राशि से 12वीं राशि में प्रवेश करता है और तब समाप्त होता है जब शनि जन्म की चंद्र राशि से 2वीं राशि से निकलता है। चूंकि शनि को एक राशि से दूसरी राशि में जाने में लगभग ढाई साल का समय लगता है, जिसे शनि की ढैया कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों में पारगमन करने में लगभग साढ़े सात साल लगते हैं और इसे साढ़े साती कहा जाता है। आम तौर पर साढ़े साती जीवनकाल में तीन बार आती है - पहली बार बचपन में, दूसरी बार युवावस्था में और तीसरी बार बुढ़ापे में। पहली साढ़े साती का प्रभाव शिक्षा और माता-पिता पर पड़ता है। दूसरी साढ़े साती का प्रभाव पेशे, वित्त और परिवार पर पड़ता है। अंतिम साढ़े साती का प्रभाव स्वास्थ्य पर अधिक होता है।
- शनि वक्री: false
- सूर्य राशि: वृषभ
- राशि: कुम्भ

## साढ़ेसाती दोष के उपाय:

- शनि मूल मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें, 'ॐ शं शनैश्चराय नमः'
- शनिवार को नवग्रह स्तोत्र से शनि मंत्र का 108 बार जाप करें, 'नीलंजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छाया मार्त्तडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्'
- शनिवार को उपवास करें, केवल उड़द की दाल खाएं और शनि चालीसा का जाप करें
- शनिवार के दिन गरीबों और दिव्यांगों को उड़द की दाल और काले कपड़े दान करें
- हनुमान जयंती या शनि अमावस्या पर हवन करके भी शनिदेव की पूजा की जा सकती है

## रत्न सुझाव

ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह एक विशिष्ट रत्न से जुड़ा होता है जो ग्रह के समान ऊर्जा और ब्रह्मांडीय रंग रखता है। माना जाता है कि ये रत्न ग्रह की ऊर्जा के साथ शक्तिशाली तरीके से बातचीत करते हैं। सही रत्न पहनकर, व्यक्ति अपने जीवन में ग्रह के सकारात्मक प्रभाव को मजबूत कर सकता है। रत्न या तो सकारात्मक ऊर्जा को शरीर में वापस परावर्तित करके या हानिकारक कंपन को अवशोषित करके सुरक्षात्मक प्रभाव पैदा करके काम करते हैं। जब पहना जाता है, तो वे एक फिल्टर के रूप में कार्य करते हैं, जिससे केवल लाभकारी ऊर्जा ही गुजर पाती है और पहनने वाले को प्रभावित करती है। यह ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने में मदद करता है, कुंडली में ग्रह की भूमिका के आधार पर स्वास्थ्य, सफलता और कल्याण जैसे क्षेत्रों को बढ़ाता है।

### सुझाए गए रत्न

#### जीवन पथर



पत्रा

#### भाग्यशाली पथर



नीलमणि

#### फॉर्च्यून स्टोन



हीरा

लग्न, जिसे लग्न के नाम से भी जाना जाता है, भौतिक शरीर और उससे जुड़ी हर चीज का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे कि स्वास्थ्य, दीर्घायु, प्रतिष्ठा, स्थिति और समग्र जीवन यात्रा। यह पूरी कुंडली की नींव के रूप में कार्य करता है और किसी व्यक्ति के जीवन सार को समझने की कुंजी रखता है। लग्न से जुड़ा रत्न, जो लग्न का शासक ग्रह है, को 'लाइफ स्टोन' के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि यह विशेष पथर लग्नेश की सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाता है और पहनने वाले की भलाई और सफलता का समर्थन करता है। जीवन भर लगातार लाइफ स्टोन पहनने से इसके लाभों को अधिकतम करने में मदद मिल सकती है, जिसमें बेहतर स्वास्थ्य, मजबूत जीवन शक्ति और जीवन के उद्देश्य के साथ बेहतर संरेखण शामिल है।

जन्म कुंडली में पाँचवाँ भाव सबसे अनुकूल और सकारात्मक भावों में से एक माना जाता है। यह बुद्धि, उच्च शिक्षा, रचनात्मकता, बच्चों और अप्रत्याशित लाभ, जैसे पुरस्कार जीतना या अचानक वित्तीय लाभ से जुड़ा हुआ है। यह भाव पूर्व पुण्य कर्मों का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्म हैं। नतीजतन, पाँचवाँ भाव आशीर्वाद और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। पाँचवें भाव पर शासन करने वाले ग्रह से जुड़ा रत्न 'भाग्यशाली रत्न' के रूप में जाना जाता है। माना जाता है कि इस रत्न को पहनने से इस भाव के सकारात्मक प्रभाव बढ़ते हैं, जिससे बेहतर बुद्धि, रचनात्मकता और समृद्धि के अवसर जैसे लाभ मिलते हैं। यह पिछले अच्छे कर्मों के संबंध को भी मजबूत कर सकता है, जिससे यह सफलता और खुशी को आकर्षित करने का एक शक्तिशाली साधन बन जाता है।

जन्म कुंडली में नौवें भाव को भाग्य स्थान या किस्मत और भाग्य का भाव कहा जाता है। यह व्यक्ति के भाग्य, सफलता और जीवन में उपलब्धियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भाव बुद्धि, ज्ञान, आध्यात्मिक विकास और पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप मिलने वाले पुरस्कारों जैसे क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। इसे अक्सर आशीर्वाद और समृद्धि का भाव माना जाता है। नौवें भाव पर शासन करने वाले ग्रह से जुड़े रत्न को 'भाग्य रत्न' कहा जाता है। माना जाता है कि इस रत्न को पहनने से इस भाव के सकारात्मक प्रभाव बढ़ते हैं, जिससे किस्मत, सफलता और अनुकूल अवसर आकर्षित होते हैं। यह पहनने वाले को उनके भाग्य के साथ सरेखित करने में भी मदद करता है, जिससे वे अपने पिछले अच्छे कार्यों के पुरस्कारों का आनंद ले पाते हैं।

## जीवन पथर

पत्रा



उँगलिया	छोटी उंगली (दाहिना हाथ)
वज्जन	3, 6 या 7 कैरेट
विकल्प	ओलिवाइन नामक रत्न-विशेष, हरा गोमेत, हरा टूमलाइन

धातु	सोना या चाँदी
दिन	बुधवार
ग्रह	बुध

इसके साथ नहीं पहनना चाहिए : पीला नीलम, मूँगा, मोती  
अच्छा परिणाम : संपन्न उद्यम, उपलब्धि, खुशी, खड़ा and संपत्ति वृद्धि

## विवरण

पत्रा एक हरे रंग का रत्न है जो बेरिल परिवार से संबंधित है। इसे दुर्लभ माना जाता है क्योंकि दोषरहित पत्रा ढूँढना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। अधिकांश पत्रे में खामियां होती हैं, जैसे पंख जैसी दरारें और समावेशन। ऐसा पत्रा पाना कठिन है जो गहरा हरा, पूरी तरह से साफ, हल्की चमक वाला और उच्च घनत्व वाला हो।

## तरीका

पहली बार अंगूठी पहनने से पहले इसे कुछ देर के लिए कच्चे गाय के दूध में भिगो दें। फिर इसे गंगाजल, झरने के पानी, बारिश के पानी या तांबे के बर्तन में रखे पानी से धो लें। धोने के बाद अंगूठी को हरे कपड़े पर रखें जिस पर लाल चंदन, रोली या केसर से बुध यंत्र बना हो। साथ ही एक कांसे की थाली पर खुदा हुआ बुध यंत्र या उसी हरे कपड़े पर बुध की एक कांसे की मूर्ति रखें। अंत में बुध मंत्र का जाप करते हुए अंगूठी में रखे यंत्र और रत्न की पूजा करें।

**मंत्र:**ॐ बुम बुधाय नमः ॐ

## पहनने का समय

आपको बुधवार के दिन पत्रा खरीदना चाहिए जब चंद्रमा के बढ़ते चरण के दौरान सूर्य उत्तर की ओर बढ़ रहा हो। सूर्योदय के दो घंटे बाद इसे खरीदकर जौहरी को सौंप दें। जब अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती या रोहिणी नक्षत्र सक्रिय हो, बुधवार, शुक्रवार या शनिवार को, कन्या या मिथुन राशि का उदय हो, तब पत्रा को अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी पहनने का सबसे अच्छा समय भी सूर्योदय के दो घंटे बाद का है।

## भाग्यशाली पत्थर

नीलमणि



उँगलिया	अनामिका	धातु	चांदी/प्लैटिनम
वज्जन	3 से 4 कैरेट	दिन	शनिवार
विकल्प	जमुनिया, आयोलाइट, नीला पुखराज	ग्रह	शनि ग्रह

इसके साथ नहीं पहनना चाहिए : मोती, मूँगा, माणिक

अच्छा परिणाम : कल्पना, सचेतन, राजनीतिक उपलब्धि, समग्र स्थिरता and धन हानि से बचाता है

## विवरण

पत्ता एक हरे रंग का रत्न है जो बेरिल परिवार से संबंधित है। इसे दुर्लभ माना जाता है क्योंकि दोषरहित पत्ता ढूँढना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। अधिकांश पत्ते में खामियां होती हैं, जैसे पंख जैसी दरारें और समावेशन। ऐसा पत्ता पाना कठिन है जो गहरा हरा, पूरी तरह से साफ, हल्की चमक वाला और उच्च घनत्व वाला हो।

## तरीका

पहली बार अंगूठी पहनने से पहले इसे कुछ देर के लिए कच्चे गाय के दूध में भिगो दें। फिर इसे गंगाजल, झरने के पानी, बारिश के पानी या तांबे के बर्तन में रखे पानी से धो लें। धोने के बाद अंगूठी को हरे कपड़े पर रखें जिस पर लाल चंदन, रोली या केसर से बुध यंत्र बना हो। साथ ही एक कांसे की थाली पर खुदा हुआ बुध यंत्र या उसी हरे कपड़े पर बुध की एक कांसे की मूर्ति रखें। अंत में बुध मंत्र का जाप करते हुए अंगूठी में रखे यंत्र और रत्न की पूजा करें।

**मंत्र:**ॐ बुधाय नमः ॐ

## पहनने का समय

आपको बुधवार के दिन पत्ता खरीदना चाहिए जब चंद्रमा के बढ़ते चरण के दौरान सूर्य उत्तर की ओर बढ़ रहा हो। सूर्योदय के दो घंटे बाद इसे खरीदकर जौहरी को सौंप दें। जब अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती या रोहिणी नक्षत्र सक्रिय हो, बुधवार, शुक्रवार या शनिवार को, कन्या या मिथुन राशि का उदय हो, तब पत्ता को अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी पहनने का सबसे अच्छा समय भी सूर्योदय के दो घंटे बाद का है।

## भाग्य का पत्थर

हीरा



उँगलिया	अनामिका/छोटी उंगली (दाहिना हाथ)	धातु	चाँदी/प्लैटिनम/सफेद सोना
वज्जन	0.5 या 1 कैरेट	दिन	बुधवार
विकल्प	दूधिया पत्थर, सफेद नीलमणि, प्राकृतिक जिक्रोन	ग्रह	शुक्र

इसके साथ नहीं पहनना चाहिए : पीला नीलम, पन्ना

अच्छा परिणाम : भाग्य, रचनात्मकता, जीवन शक्ति, लोकप्रियता and आकर्षण

## विवरण

हीरे देखने में आकर्षक होते हैं और अपने खूबसूरत रंगों के लिए जाने जाते हैं। जब प्रकाश उन पर चमकता है, तो वे हल्का नीला, लाल या दोनों रंगों का मिश्रण दिखा सकते हैं, जिससे एक चमकदार प्रभाव पैदा होता है। हीरे चमकीले होते हैं और चमकदार तरीके से प्रकाश को प्रतिबिंబित कर सकते हैं। एक अच्छा हीरा चमकदार, कांतिवान और देखने में मनभावन होता है। इसकी चमक चंद्रमा की तरह शांत है, और इसमें एक सुंदर, क्रिस्टल-क्लियर गुणवत्ता है। हीरे अपने चारों ओर प्रकाश के इंद्रधनुष बना सकते हैं। प्राचीन हिंदू ग्रंथों में आठ प्रकार के हीरों का उल्लेख है: हंसपति, कमलापति, वसंती, वज्रनील, वनस्पति, शब्दमवज्र, तेलिया और संलोयी।

## तरीका

पहली बार अंगूठी पहनने से पहले इसे कुछ मिनटों के लिए साफ पानी में भिगो दें। इसके बाद उस छल्ले को अगरबत्ती के चारों ओर 11 बार धुमाएं। हीरे की अंगूठी को पूरी तरह से सक्रिय करने और सर्वोत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए, इसे पहनने से पहले 108 बार मंत्र का जाप करें।

मंत्र: ॐ शुं शुक्राय नमः ॐ

## पहनने का समय

शुक्रवार के दिन जब शुक्र वृषभ, तुला या मीन राशि में हो तो आपको हीरा खरीदना चाहिए। इसे सुबह सूर्योदय से 11:00 बजे के बीच खरीदें। हीरे का वजन कम से कम 1 रक्तिक (0.59 मीट्रिक कैरेट) होना चाहिए और वह दोष रहित होना चाहिए। इसे चाँदी, सफेद सोने या प्लैटिनम में जड़ा जाना चाहिए। उसी दिन रत्न को जौहरी को सौंप दें, और सुनिश्चित करें कि अंगूठी बनाई गई है और रत्न को सुबह 5 से 7 बजे के बीच स्थापित किया गया है। उस शुक्रवार को, चंद्र भवन के नीचे।



## 7 मुखी: महालक्ष्मी रुद्राक्ष, 14 मुखी: हनुमान रुद्राक्ष

सुझाया गया रुद्राक्ष: 7 मुखी

**गुण:** 7 मुखी: धन और प्रचुरता, 14 मुखी: अंतर्ज्ञान क्षमता को बढ़ाता है, नुकसान से बचाता है

**प्रतिक्रिया:** वित्तीय स्थिरता के लिए 7 मुखी और नकारात्मक ऊर्जा से सुरक्षा के लिए 14 मुखी पहनें।

**पहनने का समय:** शनिवार की सुबह

**कैसे पहनें:** शुद्धि के बाद शनिवार को धारण करें

**शुद्धिकरण:** पानी या दूध में भिगोएँ, कपड़े से साफ़ करें, सुगंध लगाएँ, फूल और धूप चढ़ाएँ, मंत्र का जाप करें, भगवान शिव से प्रार्थना करें और रुद्राक्ष पहनें।

**मंत्र:** 7 मुखी: 'ओम हूम नमः'

## अनुकूल अंक

5

7

9

भाग्यांक

मूलांक संख्या

नाम संख्या।

### अंकज्योतिष विवरण

नाम	Sunil Kumar Suman
जन्मतिथि	07/06/1999
कट्टरपंथी शासक	केतु
मैत्रीपूर्ण संख्याएँ	8,6,5
तटस्थ संख्याएँ	3
शत्रु संख्या	1,2,9
अनुकूल पत्थर	बिल्ली की ओँख [लहसुनिया] (गुलाबी, पीला, हरा)
अनुकूल दिन	रविवार, सोमवार
अनुकूल दिशा	उत्तर-पश्चिम
अनुकूल अक्षर	P, R, T
अनुकूल देव	भगवान गणेश
अनुकूल रंग	बहुरंगी
अनुकूल तत्व	जल
अनुकूल संकेत	मीन
अनुकूल मंत्र	ॐ सां सर्वे सौं सः केतवे नमः

## अंकज्योतिष रिपोर्ट

### मूलांक संख्या

अंक ज्योतिष में आपका सबसे महत्वपूर्ण अंक वह तारीख है जिस दिन आपका जन्म हुआ है। यह अंक आपके चरित्र, व्यक्तित्व और व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण तत्वों की पहचान कर सकता है। यह अंक आपके समग्र व्यक्तित्व के मूल तत्वों को निर्धारित करता है। जैसे कि आप दबंग हैं या शर्मीले, नेता हैं या अनुयायी। इसका कारण यह है कि प्रत्येक अंक का अपना स्वभाव और व्यक्तिगत कंपन होता है। सावधानीपूर्वक विश्लेषण के बाद, हमने आपका अंक ज्योतिष जन्म अंक इस प्रकार निकाला है: आपका मूलांक 7 है। चूंकि आपका जन्म मूलांक 7 में हुआ है, इसलिए केतु या नेपच्यून का प्रभाव आप पर प्रमुख रूप से है। धार्मिकता आपके भीतर स्वाभाविक रूप से विद्यमान है, और आप इससे संबंधित मामलों में काफी कदम हो सकते हैं। आपको कविता और पेटिंग पसंद है। आपकी सहज बुद्धि आपकी सबसे बड़ी ताकत है और आप दूसरों को समझने में कुशल हैं। हालाँकि, दूसरी ओर, दूसरे लोगों के लिए आपको समझना इतना आसान नहीं है। आपको यात्रा करना, सैर-सपाटा और छुट्टियां बिताना पसंद है। आपके जीवन में सांसारिक सुख-सुविधाओं का अभाव हो सकता है। आप अपने मौलिक विचारों के आधार पर धन कमाते हैं और दान-पृण्य भी करते हैं। आप भविष्य की चिंता करते हैं, इसलिए अच्छे काम करने में आनंद लेते हैं। आपके अंदर कल्पना शक्ति अच्छी है और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की विशेषता है। एक अच्छे व्यवसायी बनने के सभी अच्छे गुण और विचार आपके अंदर हैं और इनका सदुपयोग करके आप एक सफल उद्यमी बन सकते हैं। दूसरों को प्रभावित करने की कला आपका सबसे बड़ा गुण है।

### भाग्यांक

एक अच्छे मित्र और मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति होने के कारण आपकी रुचि सद्गुरु, बाजार, जुआ और व्यापार में हो सकती है और आप व्यवसाय भी काफी सफलतापूर्वक चला सकते हैं। आपको बात करने की आदत होती है जिससे आप दूसरों को मनाने और अपने काम करवाने में मदद करते हैं। हालाँकि, आप पैसे कमाने के लिए अपनी नैतिकता की अनदेखी भी कर सकते हैं। आपको अपनी ऊर्जा का उपयोग अच्छे कामों में करने पर ध्यान देना चाहिए और खुद को किसी भी दुखी माहौल से दूर रखना चाहिए। आपकी बुद्धिमत्ता और चतुराई के कारण आपकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी और आप किसी भी व्यवसायिक प्रयास में विशेष रूप से प्रगति करेंगे।

### नाम संख्या

अंक ज्योतिष चार्ट में नाम अंक ज्योतिष संख्या 9 असामान्य है, लेकिन आमतौर पर वे ऐसे लोग होते हैं जिन्हें सबसे अधिक मिलनसारिता, दयालुता और परोपकार के पाठ सीखने की आवश्यकता होती है। वे जीवन के अंतिम चरण में ही सही, कठिन तरीके से सीखते हैं। दूसरी ओर, मानचित्र में अंक ज्योतिष संख्या 9 की उचित संख्या एक प्रेमपूर्ण, दयालु व्यक्ति की दर्शाती है, जो समझदार और मददगार है और जो दूसरों की मदद करने से नहीं डरता। भले ही ये लोग दिल से बुरे न हों, लेकिन इतने सारे अंक 9 होने का मतलब संतुलित व्यक्तित्व नहीं है। चूंकि उन्हें लगता है कि वे सब कुछ जानते हैं, इसलिए उनमें जीवन के हर पहलू में गड़बड़ करने की प्रवृत्ति होती है, जिससे वे चीजें सीखते हैं। नाम अंक ज्योतिष संख्या 9 दूसरों की समस्याओं में शामिल होने के लिए इतने प्रवण होते हैं कि वे अंततः खुद को ही चोट पहुँचाते हैं।

## शुभ स्थान

ईशान कोण या उत्तर-पूर्व दिशा आपके लिए सबसे अनुकूल रहेगी, क्योंकि आपका मूल अंक 7 है। इस दिशा में काम करना या व्यापार करना आपके लिए सफलता और उपलब्धियां लेकर आएगा, जबकि यहां रहने से भी आपको तरकी मिलेगी। ग्रीस, स्कॉटलैंड, रोडेशिया, कश्मीर, मॉस्को और बैंकॉक आपके लिए लाभकारी और शुभ स्थान हैं।

## स्वास्थ्य

अंक 7 के अंतर्गत जन्म लेने से संकेत मिलता है कि आप किसी न किसी बीमारी की चपेट में रह सकते हैं, क्योंकि आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली दूसरों की तुलना में कमज़ोर है। नतीजतन, आप अक्सर आसानी से बीमार पड़ सकते हैं, और आप अचानक बेहोश हो सकते हैं, सिरदर्द हो सकता है, और कभी-कभी हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक शक्ति की हानि, जीभ और फेफड़ों की बीमारियों आदि से पीड़ित हो सकते हैं।

## शुभ समय

केतु आपके स्वामी हैं इसलिए जुलाई से अगस्त तक का समय आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस समय में आप जो भी कार्य करेंगे उनमें सफलता मिलेगी और जीवन में सामंजस्य बढ़ेगा। आप इस समय का सदुपयोग जीवन में आगे बढ़ने के लिए कर सकते हैं।

## आजीविका

चूँकि आपका जन्म इस अंक में हुआ है, इसलिए आपको जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ा है, जिससे आपको जीवन के कई सबक सीखने को मिले हैं। परिणामस्वरूप, ऐसे कई करियर हैं जो आपको सफलता, सौभाग्य और धन-संपत्ति दिलाएंगे। इनमें फिल्म उद्योग, यात्रा, एयर होस्टेस, डेयरी फार्म, ड्राइवर, मछली विक्रेता, केमिस्ट, अस्पताल, सीआईडी, बॉडी बिल्डर और इनसे संबंधित अन्य क्षेत्र शामिल हैं।

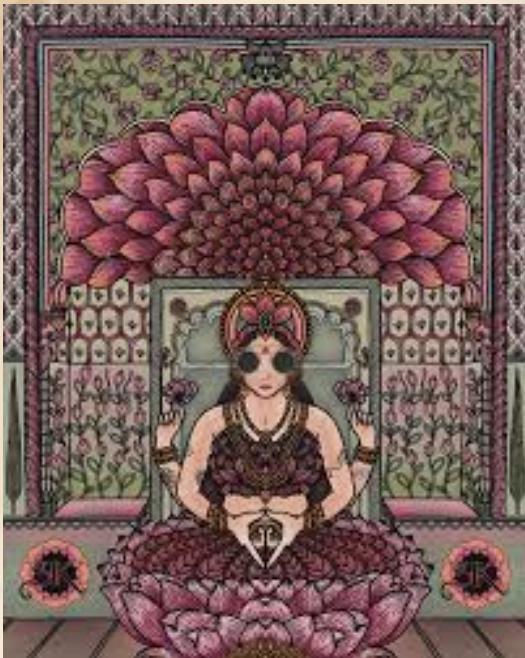
## व्रत एवं उपाय

महीने के शुक्र तिथि में पड़ने वाले मंगलवार से शुरू करके 19 या 21 मंगलवार व्रत रखें। इस दिन केवल एक बार भोजन करें और मीठा खाना और भी अच्छा रहेगा। लाल रंग के कपड़े पहनें, केतु बीज मंत्र का जाप करें और छोटे बच्चों को गुड़ और चने का प्रसाद खिलाएं। इसके अलावा आप किसी हनुमान मंदिर में जाकर लाल झांडा भी लगा सकते हैं।

## यंत्र

मूलांक 7 में जन्म लेने वाले जातकों का स्वामी केतु है। इसलिए, केतु से दैवीय कृपा और अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए, आपको केतु यंत्र को मंगलवार के दिन, केतु नक्षत्रों, अर्थात् अश्विनी, मघा और मूल में धारण करना चाहिए।

## लग्न रिपोर्ट



### विवरण

पाधान	कन्या
लॉर्ड	बुध
लॉर्ड हाउस स्थान	10
प्रभु शक्ति	मज़बूत
प्रतीक	कुंवारी लड़की
राशि चक्र लक्षण	द्वैत, पार्थिव, दक्षिण
भाग्यशाली रत्न	पन्ना
उपवास का दिन	बुधवार

### मंत्र

ॐ बुधग्रहाय विद्यहे इन्दु पुत्राय धीमहि तत्रो बुधः प्रचोदयात्

### व्यक्तिगत गुण:

आप मुख्य रूप से सेवा भावना वाले, बहुत महत्वाकांक्षी, बातूनी, भावुक, आत्मविश्वासी और कभी-कभी हावी होने वाले होते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जहां भी संभव हो अपनी शक्ति या बुद्धि का उपयोग करना पसंद करते हैं। कन्या राशि में जन्मे जातक शांत, सौम्य और सहानुभूति रखने वाले स्वभाव के हो सकते हैं और जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। आपको पालतू जानवर रखना पसंद है। आप विज्ञान, दर्शन, लेखांकन और प्रबंधन के क्षेत्र में सफल हैं। अच्छे संयोग से आप अपने करियर में आगे बढ़ेंगे और बुरे संयोग से आप कर्ज में ढूब जाएंगे।

### विज्ञ और इनोवेशन:

विस्तार और व्यावहारिकता पर आपका सावधानीपूर्वक ध्यान आपको अपने सभी प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। आप पूर्णता और दक्षता चाहते हैं।

## आजीविका और धन:

चूंकि लग्न का स्वामी बुध दसवें घर में है, इसलिए आपका संचार विभाग में करियर बन सकता है। आप एक अच्छे कवि, लेखक या ब्लॉगर बन सकते हैं। आप अत्यधिक कल्पनाशील हैं और उस रचनात्मकता का उपयोग अच्छा लिखने में करेंगे। आप सबसे अधिक बिकने वाले लेखक हो सकते हैं या आध्यात्मिक वक्ता या प्रेरक वक्ता बन सकते हैं। आप एक पूर्णतावादी हैं जो अच्छा करने का प्रयास करते हैं।

## आध्यात्मिक सलाह:

अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर, अपने विश्लेषणात्मक दिमाग को अपनाएं। आंतरिक सद्ग्राव की भावना प्राप्त करने के लिए सचेतनता का अभ्यास करें।

## गुण:

### अच्छी:

- विस्तार-उन्मुख, व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक, व्यवस्थित

### खराब:

- आलोचनात्मक, अत्यधिक सोचना, चिंतित, अनम्य

**स्पष्टीकरण:** पांच कारकों का समामेलन, अर्थात् जन्म का दिन, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र, जन्म योग और जन्म करण ज्योतिषियों को जातक के पंचांग फल की गणना करने में मदद करते हैं। जातक के जन्म के समय इन विकारों को ध्यान में रखते हुए, ज्योतिषी जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र चित्रित करता है।

### तिथि

**नाम:** अष्टमी

**भविष्यवाणी:** अष्टमी तिथि को जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने पार्टनर के प्रति झुकाव रखने वाले, अक्सर बातूनी और रोमांटिक होते हैं। वे निर्णायक होते हैं लेकिन गैर-पारंपरिक और असंगत व्यवहार दिखा सकते हैं।

### नक्षत्र

**नाम:** पूर्वभाद्रपद

**भविष्यवाणी:** undefined

### सप्ताह का दिन

**नाम:** सोमवार

**भविष्यवाणी:** सोमवार को जन्मे व्यक्ति चतुर और बुद्धिमान होते हैं, कार्यों को कुशलतापूर्वक करने में सक्षम होते हैं। आपकी आवाज में विनम्रता है जो आपको दूसरों का प्रिय बनाती है। सरकारी भूमिका में सेवा करने की संभावना के कारण, आप सुख और दुःख में दृढ़ रहते हैं, उन्हें दैनिक जीवन का हिस्सा मानते हैं।

### योग

**नाम:** विष्णुमध्य

**भविष्यवाणी:** विशंभ योग में जन्म लेने का मतलब है कि आपका व्यक्तित्व आकर्षक और सौभाग्यशाली है। आप अच्छे रूप और बुद्धि से संपन्न हैं और आप हमेशा आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे। आप एक सुखी और संतुष्ट पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे और आपके सामाजिक दायरे पर एक मजबूत प्रभाव पड़ेगा।

### करण

**नाम:** बालव

**भविष्यवाणी:** बलव करण में जन्म लेने का मतलब है कि आपमें चुनौतियों का सामना करने के लिए बहुत बहादुरी और साहस है। आपमें कठिनाइयों पर विजय पाने की अपार शक्ति है और आप विपरीत लिंग की सुंदरता के प्रति अत्यधिक आकर्षित होते हैं। आपमें कविता और कला की प्रतिभा भी हो सकती है।



## धन्यवाद



JYOTISHAM  
ASTRO API

For Any Inquiries Please Contact

Microsoft

Mumbai, Maharashtra

[www.synilogictech.com](http://www.synilogictech.com)

[microsf@gmail.com](mailto:microsf@gmail.com)

[+91 8894676565](tel:+918894676565)